मुस्लिम परिवार से परिचय (2 का भाग 1)

रेटिंग: **5.0**

विवरण: ?? ?????? ??????? ???? ?? ???????? ????????? ??? ?? ?? ??? ?? ??-??? ???? ??? ????????? ???? ?? ??? ??????? ?? ????? ????? ?? ?? ?? ??????? ?????? ?? ??????? ?? ???? ?? ???????? ???? ??? ??? 1: ????? ?? ??? ????? ?? ????????, ?????????? ????? ?? ???-????? ?? ???????

श्रेणी: [पाठ](#) › [सामाजिक बातचीत](#) › [मुस्लिम समुदाय](#)

द्वारा: Imam Mufti

प्रकाशित हुआ: 08 Nov 2022

अंतिम बार संशोधित: 07 Nov 2022

उद्देश्य

·इस्लाम में शादी और परिवार की मूल बातें जानना।

·शादी के उद्देश्य को जानना।

·आंतरधर्मीय विवाह के इस्लामी नियमों को जानना।

·पति-पत्नी का एक-दूसरे के प्रति अधिकार जानना।

अरबी शब्द

·*???* - दहेज, दुल्हन का उपहार, जो एक पुरुष अपनी पत्नी को देता है।

परिवार समाज के केंद्रीय संस्थानों में से एक है। इस्लाम के अनुसार एक परिवार शादी से बनता है। इस्लाम में विवाह एक कानूनी व्यवस्था है, एक संस्कार नहीं जैसा ईसाई धर्म मे है, और यह एक लिखित अनुबंध से होता है। विवाह स्थिरता, निष्ठा, सुरक्षा और वयस्कता के बारे में है। वैवाहिक जीवन दया, प्रेम और करुणा से पहचाना जाता है जैसा कि अल्लाह कहता है:

"और उसने उत्पन्न कर दिया तुम्हारे बीच प्रेम तथा दया।" (क़ुरआन 30:21)

पारविारकि जीवन की मुख्य भावनाएं जो इस सामाजकि संस्था की प्रकृत‍ि और अर्थ को परभिाषति करती हैं, वे हैं प्रेम, पालन-पोषण और नर्भिरता जहां पत‍ि-पत्नी एक-दूसरे में आराम पाते हैं:

"वही (अल्लाह) है, जसिने तुम्हारी उत्पत्त‍ि एक जीव से की और उसीसे उसका जोड़ा बनाया, ताक‍ि उससे उसे संतोष मलिे।" (क़ुरआन 7:189)

"वे तुम्हारा वस्त्र हैं तथा तुम उनका वस्त्र हो" (क़ुरआन 2:187)

ववािह का उद्देश्य

1. यौन इच्छा एक सामान्य मानवीय भावना है। इस्लाम इसे न तो रोकता है और न ही तरिस्कार की नजर से देखता है। यह सामाजकि जम्मिेदारी को कम कएि बनिा यौन आग्रह को संतुष्ट करने के लएि रास्ता प्रदान करता है। यह ववािह के अंदर कामुकता को वनियिमति करके ऐसा करता है।

2. एक व्यक्त‍ि इतना कमजोर होता है क‍ि वो इस जीवन को अकेले नहीं गुजार सकता है। जीवनसाथी जीवन की खुशयिों और गमों को साझा करता है। ववािह व्यक्तयिों को आवश्यक सामाजकि सहायता प्रदान करता है। ववािह आधुनकि समाज की अवैयक्तकि, नौकरशाही दुनयिा की पृष्ठभूम‍ि के वपिरीत व्यक्तगित, अंतरंग संबंधों को एक अर्थ प्रदान करता है।

3. परवािर नरिंतरता और वसि्तार के बारे में है। ववािह भावी पीढ़ी को आगे बढ़ाती है और उन्हें पछिली पीढ़ी के मूल्य और ज्ञान देती है।

4. ववािह वंश की रक्षा करता है, प्रजनन को नयिंत्रति करता है, और परवािर इकाई के भीतर पैदा हुए बच्चों के समाजीकरण को सुनश्चिति करता है। इस्लाम बच्चों को पालने के लएि मां को पूरी तरह से जम्मिेदारी नहीं देता है; बल्क‍ि यह उनके लएि मुख्य रूप से पति को जम्मिेदारी देता है। प्रत्येक बच्चे को अपने जैवकि पति के लएि जम्मिेदार होना चाहएि, ताक‍ि समाज में अशुद्ध यौन संबंधों के कारण वंश मश्रिति न हो। ववािह के माध्यम से व्यक्तयिों को एक साथ जोड़ा जाता है और वंश के माध्यम से अपने नाम और परंपराओं को कायम रखने के लएि सामाजकि और कानूनी मंजूरी दी।

आंतरधर्मीय ववािह

एक मुसलमान के लएि जीवनसाथी चुनने में उसकी आस्था सबसे महत्वपूर्ण कारक है। मुसलमानों को गैर-मुसलमानों से शादी करने की अनुमत‍ि नहीं है। एकमात्र अपवाद यह है क‍ि मुस्लमि पुरुषों को कुछ

शर्तों के साथ यहूदी या ईसाई महिलाओं से शादी करने की अनुमति है। उन्हें किसी गैर-मुस्लिम महिला से शादी करने की अनुमति नहीं है, लेकिन केवल वे जो यहूदी या ईसाई धर्म का पालन करती हैं। हालांकि, शुद्धता एक महत्वपूर्ण शर्त है। केवल उस महिला की शादी हो सकती है जो कुंवारी, तलाकशुदा या विधवा है।

केवल पुरुषों को अन्य धर्मों की महिलाओं से शादी करने की अनुमति इसलिए है ताकि मुस्लिम महिला के धर्म की रक्षा हो सके। यदि कोई मुस्लिम पति अपनी पत्नी से अनुपयुक्त कपड़े पहनने या अपने पुरुष मित्रों को चूमने के लिए मना करता है जैसा कि पश्चिमी देशों में एक सामाजिक प्रथा है - तो वह अपने धर्म की शिक्षाओं को प्रभावित किए बिना इसका पालन कर सकती है। लेकिन एक ईसाई पति अपनी मुस्लिम पत्नी को शराब खरीदने, उसे सूअर का मांस पकाने, तंग कपड़े पहनने, या अपने दोस्तों को चूमने के लिए कहता है, तो इससे अल्लाह की अवज्ञा होगी, और इसलिए यह उसकी धार्मिक भावना के लिए विनाशकारी होगा। इसके अलावा, मुस्लिम पुरुषों को गैर-मुस्लिम देशों और मुस्लिम अल्पसंख्यक देशों की यहूदी या ईसाई महिलाओं से शादी करने से मना किया जाता है। यदि उनका तलाक होता है या पति की मृत्यु हो जाती है, तो अदालत आमतौर पर मां को बच्चे की जिम्मेदारी देगी जो उन्हें गैर-मुसलमानों के रूप में पालेगी।

पति-पत्नी का अधिकार

वैवाहिक सद्भाव बनाए रखने के लिए इस्लाम स्पष्ट रूप से प्रत्येक पति या पत्नी के अधिकारों और जिम्मेदारियों को निर्धारित करता है। तथ्य क़ुरआन में लिखा है:

“और स्त्रियों के लिए वैसे ही अधिकार हैं, जैसे पुरुषों के उनके ऊपर हैं। फिर भी पुरुषों को स्त्रियों पर एक प्रधानता प्राप्त है” (क़ुरआन 2:228)

सामान्य तौर पर, परिवार में उनकी भूमिका के कारण पतियों को पत्नी से अधिक अधिकार प्राप्त हैं, जैसे माता-पिता के पास अपने बच्चों की तुलना में अधिक अधिकार होते हैं और नेताओं के पास आम जनता की तुलना में अधिक अधिकार होते हैं, आदि। एक पति परिवार का प्रभारी होता है।

नेतृत्व हालांकि आपसी परामर्श पर आधारित है, यह तानाशाही नहीं है। वैवाहिक जीवन के मुद्दों में से एक बच्चे का दूध छुड़ाना - इसके लिए क़ुरआन आपसी परामर्श करने को कहता है:

“यदि दोनों आपस की सहमति तथा प्रामर्श से (दो वर्ष से पहले) दूध छुड़ाना चाहें, तो दोनों पर कोई दोष नहीं” (क़ुरआन 2:233)

क़ुरआन पति-पत्नी को दयालुता से रहने और एक दूसरे से परामर्श करने के लिए प्रोत्साहित करता है:

“और विचार-विमर्श कर लो, आपस में उचित रूप से” (क़ुरआन 65:6)

संक्षेप में, एक पत्नी के अपने पति पर अधिकार हैं:

(1) पति की ओर से विवाह के समय दिया गया महर या दुल्हन का उपहार।

(2) आर्थिक रूप से रखरखाव, जिसमें आवास, भोजन, कपड़े शामिल हैं, और जो आमतौर पर स्वीकार्य है उसके अनुसार उस पर खर्च करना।

(3) अच्छा व्यवहार और दया।

(4) संभोग।

(5) तलाक: एक पत्नी उस व्यक्ति से तलाक ले सकती है जो अल्लाह की अवज्ञा करने पर जोर देता है। एक पत्नी क्रूर व्यवहार और शारीरिक शोषण, या अपने अधिकारों की पूर्ति न करने, या किसी अन्य वैध कारण से भी तलाक की मांग कर सकती है।

पति के अपनी पत्नी पर अधिकार हैं:

(1) आज्ञाकारिता। एक पति का अपनी पत्नी पर अधिकार है कि पत्नी उसकी आज्ञा का पालन तब तक करे जब तक वह उसकी क्षमताओं के भीतर उचित है, और इसमें अल्लाह की अवज्ञा शामिल नहीं है। एक मुसलमान पाप करने के लिए किसी की भी बात नहीं मान सकता, पति की तो बात छोड़ दीजिये।

(2) पति को अच्छे व्यवहार और दया का अधिकार है।

(3) संभोग।

(4) तलाक

https://www.newmuslims.com/hi/articles/24

कॉपीराइट © 2011 - 2024 NewMuslims.com. सर्वाधिकार सुरक्षित।